नवभारत
| संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी | प्रेरणा स्त्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी |

निष्पक्ष और पारदर्शी दिखना भी आवश्यक

भारत में लोकतांत्रिक व्यवस्था की जड़ें जितनी गहरी हैं, उनमें चुनाव आयोग की भूमिका उतनी ही केंद्रीय है. विश्व-भर में भारतीय निर्वाचन आयोग को एक ऐसी संस्था के रूप में देखा जाता है, जिसने विशाल, विविध और जटिल देश में भी चुनाव प्रक्रियाओं को शांतिपूर्ण, सुव्यवस्थित और वैज्ञानिक ढंग से संचालित किया है. विकसित लोकतांत्रिक देश भी भारत की चुनावी पारदर्शिता और प्रबंधन क्षमता की मिसाल देते रहे हैं. यह साख दशकों से बनी है और हर चुनाव के साथ मजबूत होती गई है. लेकिन हाल के दिनों में कांग्रेस नेता राहुल गांधी द्वारा लगाए गए आरोपों ने इस छवि के आसपास एक नई बहस को जन्म दे दिया है.

बुधवार को उन्होंने एक विस्तृत प्रेस कॉन्फ्रेंस में प्रेजेंटेशन दिखाते हुए दावा किया कि हरियाणा विधानसभा चुनावों में व्यापक गड़बड़ियां हुई. उनके अनुसार, मतदाता सूची में 25 लाख फर्जी नाम पाए गए, और उन्होंने उदाहरण दिया कि एक ब्राज़ीलियन मॉडल का नाम कथित रूप से 22 अलग-अलग बूथों पर शामिल है. ये आरोप अपनी प्रकृति में गंभीर हैं और मतदाता सूची जैसी संवेदनशील प्रक्रिया पर सीधे सवाल खड़े करते हैं. निर्वाचन आयोग ने इन आरोपों का तुरंत, बिंदु वार और तर्कसंगत उत्तर जारी किया. आयोग ने बताया कि मतदाता सूची डिजिटल रूप से जुड़ी हुई है, हर प्रविष्टि की पहचान एआई आधारित डुप्लीकेशन सिस्टम से की जाती है, और किसी विदेशी नागरिक का नाम मतदाता सूची में होना तकनीकी रूप से लगभग असंभव है.

आयोग की सफाई तथ्यपरक थी, लेकिन फिर भी कुछ प्रश्नों पर राजनीतिक व सार्वजनिक स्तर पर चर्चा बनी हुई है. यही वह बिंदु है जहां लोकतंत्र की एक महत्वपूर्ण सीख सामने आती है कि लोकतांत्रिक संस्थाओं के लिए सिर्फ निष्पक्ष और पारदर्शी होना ही पर्याप्त नहीं, उन्हें निष्पक्ष और पारदर्शी दिखना भी चाहिए. लोकतंत्र का भरोसा केवल प्रक्रियाओं से नहीं, बल्कि उन प्रक्रियाओं की सार्वजनिक विश्वसनीयता से भी निर्मित होता है. यदि जनता के मन में शंका उठती है, तो संस्थान का यह कर्तव्य है कि वह सभी प्रश्नों का व्यापक, समग्र और सार्वजनिक रूप से संतोषजनक समाधान प्रस्तुत करे.

यह भी ध्यान देने योग्य है कि मतदाता सूची जैसी प्रक्रियाएं निरंतर संशोधित होती रहती हैं. भारत में प्रवासन, नगरीकरण और सामाजिक गतिशीलता के कारण बड़ी संख्या में प्रविष्टियां बदलती हैं, हटती हैं या जोड़ी जाती हैं. ऐसे में तकनीकी त्रुटियों की संभावना शून्य तो नहीं की जा सकती, लेकिन इनकी निगरानी के लिए मजबूत तंत्र मौजूद हैं. यह जिम्मेदारी निर्वाचन आयोग की है कि वह इन प्रक्रियाओं को और अधिक आधुनिक, स्वचालित और त्रुटिरहित बनाए, और जनता को नियमित रूप से अपडेट दे. इसी के साथ राजनीतिक दलों को भी यह ध्यान रखना चाहिए कि वे अपने आरोपों में तथ्यों और संयम का पालन करें. चुनावी परिवेश में तीखे आरोप-प्रत्यारोप स्वाभाविक हैं, लेकिन एक संवैधानिक संस्था पर बिना पर्याप्त प्रमाण के निशाना साधना जनता के भरोसे को चोट पहुंचाता है. राजनीतिक दलों का दायित्व है कि वे आलोचना करें, लेकिन ऐसी आलोचना जो लोकतंत्र को मजबूत करे, न कि संस्थानों पर अनावश्यक अविश्वास पैदा करे.

केंद्रीय निर्वाचन आयोग संविधान की प्रतिष्ठा का प्रतीक है. इसलिए उसके खिलाफ बयान देते समय राजनीतिक मर्यादा और तथ्यात्मक जिम्मेदारी अनिवार्य है. दूसरी ओर, आयोग को भी अपनी पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को लगातार उन्नत करना होगा, ताकि कोई भी प्रश्न अनुत्तरित न रहे. जाहिर है लोकतंत्र में विश्वास, संस्थानों और जनता दोनों के साझा प्रयास से ही कायम रहता है. यही विश्वास भारत की सबसे बड़ी शक्ति है, और इसे हर हाल में सुरक्षित रखा जाना चाहिए.

मनरेगा से हो रहा मोह भंग

न रहेंगे जॉब कार्ड, न मजदूर मांगेंगे काम

ओजस्कर पाण्डेय

एक तरफ जहां उच्च बेरोजगारी और ग्रामीण आर्थिक हालात की कठिन परिस्थितियों में मनरेगा अपनी उपयोगिता साबित कर रहा है वहीं मनरेगा पर लगातार आलोचना भी हो रही है। वैसे तो कई शोध और सरकारी एजेंसियों के रिपोर्ट मनरेगा की उपयोगिता सिद्द कर चुके हैं। कोविड महामारी का समय सरकार को इसका महत्व स्वीकार करना पड़ा और इसके लिए अतिरिक्त बजट का भी प्रबंध करना पड़ा। हालांकि यह बजट भी मनरेगा के तहत काम की उच्च मांग के सामने नाकाफी था। बहरहाल साल दर साल मनरेगा पर हमले बढ़ते गए। बजट निरंतर कम होता चला गया। कोरोना काल में गांव-गांव रोजगार का सहारा महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी अधिनियम यानी मनरेगा बना था। जब कोरोना संक्रमण की पहली बार लॉकडाउन लगा तो शहरों से लाखों की संख्या में मजदूर परिवार के साथ अपने-अपने गांव लौटे थे। ऐसे में बेरोजगार मजदूरों के घर में चूल्हा मनरेगा के कारण ही जला था। कोरोना काल में अधिकारियों ने गांव-गांव जाकर मनरेगा के जॉब कार्ड बनाए थे। जिससे हर बेरोजगार हाथ को काम मिला था। अब उसी मनरेगा से मजदूरों का मोह भंग हो गया है। इसके चौंकाने वाले आंकड़ें सामने आए हैं। चालू वित्तीय वर्ष के दौरान यूपी में 65 फीसदी से अधिक मनरेगा जॉब कार्ड धारक ने रोजगार ही नहीं मांगा। अब सरकार एक भी दिन का काम नहीं मांगने वाले जाब कार्ड धारकों का सत्यापन कर रही है। सत्यापन के बाद उनके कार्ड 31 मार्च 2023 तक टैग किए जाएंगे, जिससे काम नहीं मांगने वालों का मास्टर रोल जारी नहीं होगा। यूपी के 75 जिलों में मनरेगा में अभी 22259394 परिवार (जॉब कार्ड) पंजीकृत हैं। इन परिवारों के 30541505 श्रमिक पंजीकृत हैं। वित्तीय वर्ष 2022-23 में 20 मार्च 2023 तक यूपी में मनरेगा में रजिस्टर्ड 7661546 परिवारों के 9295751 श्रमिकों ने काम मांगा है। यानी मनरेगा में पंजीकृत 14563848 परिवार (जॉब कार्ड) के 21245754 श्रमिकों ने एक दिन का काम नहीं मांगा है। मनरेगा को लेकर अब यूपी के अलग अलग जिलों के आंकड़े चौंकने वाले हैं।

> गौरतलब है कि जितने परिवारों के पास जॉब कार्ड होता है उनमें से केवल 50 प्रतिशत के आसपास को ही प्रतिवर्ष काम मिल पाता है। इतनी बड़ी संख्या में जॉब कार्ड डिलीट करके यह आंकड़ा सुधारने की भी कवायद हो सकती है। यह कोई सामान्य बात नहीं है बल्कि बहुत खतरनाक रुझान है। लगातार बढ़ती बेरोजगारी विशेष तौर पर ग्रामीण बेरोजगारी के चलते मनरेगा में काम की मांग लगातार बढ़ रही है। मनरेगा जॉब कार्ड बनाने की कठिन प्रक्रिया होते हुए भी मजदूरों की संख्या में इज़ाफ़ा हो रहा है। अभी तक यह प्रचारित किया जाता था कि नौजवान मनरेगा में काम नहीं करना चाहते, लेकिन 18 से 30 वर्ष की आयु वाले नौजवान मज़दूरों के पंजीकरण में बढ़ोतरी हुई है।

मनरेगा में काम करने के लिए परिवार का जॉब कार्ड होना जरूरी है। अगर परिवार का जॉब कार्ड नहीं बना है तो किसी भी सदस्य को काम नहीं मिलता है। दरअसल बिना जॉब कार्ड के मनरेगा में कोई काम मांग ही नहीं सकता है। यह उसी तरह है जिस तरह सभी वयस्क नागरिकों को मताधिकार तो है लेकिन अगर मतदाता सूची में नाम नहीं है तो अधिकार होने के बावजूद वोट नहीं दे सकते हैं। ठीक उसी तरह काम का अधिकार होने के बावजूद अगर जॉब कार्ड नहीं बना है तो मज़दूर काम नहीं मांग सकते। वर्तमान में हमारे देश में 14.87 करोड़ जॉब कार्ड हैं जिनमें कुल मिलाकर 26.73 करोड़ मजदूर पंजीकृत हैं। इनमें से बहुत से मजदूर काम नहीं करते या बहुतों को काम नहीं मिलता है, लेकिन उनके पास अधिकार है कि वह कभी भी काम मांग सकते हैं। 26.73 करोड़ मजदूरों में से 14.39 करोड़ मजदूर सक्रिय मजदूर हैं। सक्रिय मजदूर उनको कहा जाता है जिन्होंने पिछले वर्ष एक भी दिन का काम किया है। इसी तरह कुल जॉब कार्ड में से 9.73 करोड़ जॉब कार्ड सक्रिय हैं। अब सरकार ने बड़ी संख्या में जॉब कार्ड ही डिलीट कर दिए हैं। संसद में सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार वर्ष 2022-2023 में 5,18,91,168 जॉब कार्ड रद्द कर दिए गए हैं। पिछले वर्ष की तुलना में इनमें 247% की बढ़ोतरी हुई है। वर्ष 2021-2022 में 1.49 करोड़ जब कार्ड रद्द किये गए थे।

सबसे ज्यादा पश्चिम बंगाल से जॉब कार्ड काटे गए हैं। इसके बाद नंबर आता है आंध्र प्रदेश और तेलंगाना का। सरकार ने जॉब कार्ड काटने के जो कारण बताए हैं वो काफी दिलचस्प हैं। कुल मिलाकर सरकार ने जॉब कार्ड डिलीट करने के पांच कारण बताये है जैसे- फर्जी जॉब कार्ड, दोहरे (डुप्लीकेट) जॉब कार्ड, मजदूर काम करने के लिए तैयार नहीं है, ग्राम पंचायत से परिवार पलायन कर गए हैं तथा मज़दूरों की संख्या में कमी। कुछ भी हो लेकिन यह मुख्य कारण नहीं है कि लोग काम नहीं करना चाहते हैं। यकीनी तौर पर इसकी पुष्टि तो खुद मजदूर या पंचायत कर सकती है लेकिन उन तक प्रशासन पहुंच ही नहीं रहा। हालांकि कानून में प्रावधान है कि अगर जॉब कार्ड काटना है तो इसकी सूचना और कारण पंचायत को देकर अनुमोदित करवाना होगा, लेकिन यह प्रक्रिया प्रशासन नहीं अपना रहा।

(यह लेखक के निजी विचार हैं)

महाकौशल की डायरी

संगठन के अनुशासन पर भारी नेताओं की आपसी खींचतान

अविनाश दीक्षित

भारतीय जनता पार्टी महानगर की कार्यकारिणी की घोषणा में हो रही देरी को लेकर अब संगठन के भीतर ही चर्चाओं का बाजार गर्म हो गया है. कोई इसे स्थानीय दिग्गजों के बीच आपसी खींचातानी होना तो कोई इसे अपने चहेतों को उपकृत कराने की लड़ाई में वर्चस्व दिखाने की जिद की बात कहते नजर आ रहे हैं.

वहीं पार्टी के सूत्रों का स्पष्ट कहना है कि संगठन का शीर्ष नेतृत्व फूंक-फूंककर कदम रख रहा है क्योंकि हाल ही में उज्जैन, इंदौर की भाजपा कार्यकारिणी घोषित तो कर दी गई लेकिन उसके बाद जो हुआ उसने पार्टी के अनुशासन के दंभ को दरकिनार कर दिया.. हुआ यूं कि घोषणा के बाद संगठन के ही कार्यकर्ताओं का ऐसा आक्रोश फूटा कि उन्होनें नगर अध्यक्ष की फोटो पर कालिख पोत दी और उनका पुतला तक फूंक डाला. इसलिए अब पार्टी का शीर्ष नेतृत्व अन्य जिलों में कार्यकारिणी की घोषणा के लिए काफी मंथन कर रहा है. खबर है कि जबलपुर भाजपा कार्यकारिणी की सूची नगर अध्यक्ष ने बनाकर शीर्ष नेतृत्व को सौंप दी है मगर कुछ अहम पदों को लेकर संगठन पदाधिकारियों के बीच सहमति नहीं बन रही है और अंदर ही अंदर विरोध भी पनप रहा है.

इस पर पार्टी का शीर्ष नेतृत्व उन विरोध का स्वर उठाने वालों को साधने की जुगत में भी जुटा है जिससे सार्वजनिक रूप से पार्टी के अनुशासन की छवि पर कोई विपरीत असर जबलपुर में न पड़े. उधर संगठन के ही कुछ चर्चित नेताओं ने नाम न छापने की शर्त पर कहा है कि नगर भाजपा में अब पहले जैसा अनुशासन नहीं रहा है और गुटबाजी इस कदर हावी हो चुकी है कि सभी को अपना वर्चस्व दिखाना सबसे पहले पसंद आ रहा है.

राजनैतिक सूत्रों की माने तो आने वाले एक सप्ताह के अंदर भाजपा नगर की कार्यकारिणी का ऐलान कर दिया जाएगा और इस सूची में तय नामों के विरोध को नियंत्रित करने की रूपरेखा भी तैयार कर ली गई है. ये कहना गलत नहीं होगा कि पहले भी भाजपा नगर में किसी सूची को लेकर विरोध नहीं हुआ हो, हालांकि बाद में पार्टी के शीर्ष नेतृत्व द्वारा फिर स्थितियां काबू में कर ली जा चुकीं हैं.

जब स्टिंग ऑपरेशन ने खोल दी कलई....

संभाग के सबसे बड़े नेताजी सुभाषचंद्र बोस मेडिकल अस्पताल के इतिहास में जो आज तक नहीं हुआ वो हाल ही में होता हुआ देखा गया... वजह सालों से अस्पताल में सक्रिय दलालों के खिलाफ गढ़ा पुलिस थाना में एफआईआर दर्ज होना और फिर 3 आरोपियों को जेल तक का सफर तय कराना... यद्यपि इसके पहले कई बार खून के दलाल मेडिकल अस्पताल परिसर में पकड़े गए लेकिन थाना से मामूली धाराओं के तहत रस्मअदायगी की कार्रवाई के बाद उन्हें छोड़ दिया जाता रहा है लेकिन इस बार दलालों को जेल तक का सफर तय करना पड़ा है. मामले का भंडाफोड़ मप्र थैलेसिमिया जनजागरण समिति के पदाधिकारियों ने स्टिंग ऑपरेशन कर किया, जिसके बाद खून बेचने वाले दलालों ने सिर पकड़ लिया और तमाम सबूतों के आधार पर पुलिस को धोखाधड़ी सहित अन्य धाराओं के तहत इन दलालों पर एफआईआर करनी पड़ी. उधर मेडिकल अस्पताल परिसर में मरीजों की मजबूरी का फायदा उठाकर 3 हजार से 10 हजार रुपए तक में खून बेचने वाले अन्य दलालों के खेमे में हड़कंप मचा हुआ है. चर्चाएं अब ये हैं कि स्टिंग ऑपरेशन ने खून के दलालों का इतिहास बदल दिया है क्योंकि हर बार ये बचकर निकल जाते थे लेकिन अब निकलना बेहद मुश्किल नजर आ रहा है. खून के दलालों ने जो अमानवीयता दिखाई उसकी सजा शुरू हो गई है परन्तु इसके साथ ही मेडिकल प्रशासन की व्यवस्थाओं की कलई भी खुल गई है.

इसरो ने किया सबसे भारी उपग्रह का प्रक्षेपण

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने अब तक का अपना 4,410 किलोग्राम का सबसे वजनदार उपग्रह सीएमएस-03 (जीएसएटी-7 आर) अंतरिक्ष में सफलतापूर्वक प्रक्षेपित कर दिखा दिया कि वह जटिलतम मिशन को अंजाम दे सकता है. यह कदम गगनयान मिशन के लिहाज से अत्यंत महत्वपूर्ण है जिसमें भारत मानवयुक्त यान अंतरिक्ष के परिक्रमा पथ में भेजेगा और उसे सकुशल वापस लाएगा. इस सीएनएस-03 ने चंद्रयान-3 स्पेस क्राफ्ट को भी पीछे छोड़ दिया है. गगनयान मिशन में भारतीय अंतरिक्ष यात्रियों को भेजने के पहले अनेक परीक्षण किए जाएंगे. इसमें पहले 3 बार मानवरहीत की उड़ान भेजी जाएगी. हर पैरामीटर पर पूरी तरह सुनिश्चित होने के बाद ही मानव को भेजा जाएगा. अंतरिक्ष स्टेशन बनाने की भी इसरो की योजना है. भारत के लॉन्च व्हीकल रॉकेट एलवीएम-3 को बाहुबली नाम दिया गया है. यही यान हमारे अंतरिक्ष यात्रियों को गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष में ले जाएगा. इसके पूर्व अंतरिक्ष यान की जीवनरक्षक प्रणाली, अंतरिक्ष यात्रियों की सुरक्षा तथा पुन: प्रवेश प्रणाली का यथोचित परीक्षण कर लिया जाएगा. गगनयान मिशन के तहत अंतरिक्ष में मानवों को भेजने में सफल होने पर भारत ऐसा करने वाला विश्व का चौथा देश बन जाएगा. अब तक अमेरिका, रूस और चीन ही ऐसा कर पाए हैं. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान केंद्र ने सीई 20 क्रायोजेनिक इंजन का निर्माण करने में सफलता पाई है. एक समय ऐसा भी था जब रूस ने इस इंजन की तकनीक भारत को देने से इनकार किया था. फिर भारतीय वैज्ञानिकों ने खुद ही इसे स्वदेश में बना लिया. इसके जरिए भारत विभिन्न पेलोड के कितने ही अंतरिक्षयान व उपग्रह स्पेस में भेज सकता है. रॅरॉकेट विज्ञान में क्रायोजेनिक प्रापल्शन की महत्वपूर्ण क्षमता हासिल करना अत्यंत महत्वपूर्ण है. रूस के खिलाफ युद्ध में मस्क के इंटरलिंक उपग्रहों से यूक्रेन को बहुत मदद मिली.

भारत ने जिस सीएमएस-03 को अंतरिक्ष में भेजा है वह सिर्फ सामान्य संचार उपग्रह नहीं है, बल्कि रणनीतिक संसाधन के रूप में उसकी बहुत अधिक उपयोगिता है. वह भारत तथा हिंद महासागर क्षेत्र में उच्च क्षमता की संचार लिंक प्रदान करेगा.

संपादकीय बोर्ड | प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

निशानेबाज

कबूतरखाना ले जाया गया दूर दाना डालने वाले हुए मजबूर

पड़ोसी ने हमसे कहा, 'निशानेबाज, मुंबई के जैन समाज को कबूतरों से विशेष प्रेम है, इसलिए वह कबूतरखाना बंद करने के खिलाफ है. उनका आंदोलनकारी रवैया देखकर सरकार ने कबूतरखाना बंद करने की बजाय अन्यत्र शिफ्ट कर दिया है. अब कबूतर प्रेमियों की नाराजगी इस बात को लेकर है कि कबूतरखाने को 10-12 किलोमीटर दूर क्यों ले जाया जा जा रहा है. उतनी दूर दाना डालने कोई कैसे जाएगा? ज्यादा से ज्यादा 2 किलोमीटर पर कबूतरखाना रहना चाहिए.'

हमने कहा, 'एक ओर इस समुदाय की जीवदया है तो दूसरी तरफ मुंबई महापालिका का आदेश है जिसमें कबूतरों को दाना डालने वालों को ऐसा करने से मना किया गया. कबूतर की विष्ठा के संपर्क में आने से फेफड़े में इन्फेक्शन होता है तथा ब्रांकाइटिस, दमा यहां तक कि क्षयरोग भी हो सकता है. इसलिए कबूतर पालने और दाना डालकर झुंड जमा करने पर मनाही की गई है.'

पड़ोसी ने कहा, 'निशानेबाज, कबूतर की कद्र देश के

प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू करते थे. चाहे 15 अगस्त का स्वाधीनता दिवस समारोह हो या गुटनिरपेक्ष देशों का सम्मेलन, वह अपने दोनों हाथों से खुले आसमान में उड़ने के लिए कबूतर छोड़ा करते थे. लंदन के पिकैडली सर्कस व रोम के स्क्वेयर पर भी कबूतरों का झुंड मौजूद रहता है. प्राचीन काल में प्रशिक्षित कबूतरों के जरिए डाक सेवा शुरू की गई थी. कबूतर के पैर में चिट्ठी बांध दी जाती थी. वह चिट्ठी पहुंचाता और फिर उसी तरह से जवाब लेकर वापस आ जाता था. आपने सलमान खान और भाग्यश्री की फिल्म 'मैंने प्यार किया' का गीत सुना होगा कबतर जा-जा, पहले प्यार की पहली चिट्ठी साजन को दे आ! कवयित्री माया गोविंद ने भी गीत लिखा था- चढ़ गया ऊपर रे, अटरिया पे लोटन-कबूतर रे! कबूतर पालना नवाबों का शौक रहा है.'

हमने कहा, 'मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस की राय है कि कबूतरों की जान बचाना, पर्यावरण की रक्षा करना और नागरिकों का स्वास्थ्य सुरक्षित रखना तीनों ही बातें महत्वपूर्ण हैं. बीएमसी कबूतरों को दाने की सप्लाई जारी रखे हुए है लेकिन कबूतरखानों को अब आबादी से दूर शिफ्ट किया जाएगा. कबूतरों को खुद हवाई सर्वे करते हुए वहां पहुंचना होगा. चिड़ियों को दाना डालने में दिक्कत को देखते हुए ही माधुरी दीक्षित ने विकल्प सुझाया था- दीदी तेरा दिवाना, हाय राम कुड़ियों को डाले दाना!'

शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

CROSS WORD 12073

-डॉ. सागर खादीवाला

1		2		■	3	4	■
	■		■	5			6
7	8		9			■	
10		■	11		■	12	
■	13	14			■		■
15	■		■	■	16		17
18	19		20		■	21	
22		■		■	23		

बाएं से दाएं
1. अधीरता, जल्दबाजी, जल्दी, जल्दी मचाने वाली, अधीर 3. मयूर, एक बड़ा पक्षी जो अपनी सुंदरता और नृत्य के लिए प्रसिद्ध है 5. अतिथि (उर्दू) 7. जीवन व्यतीत करने और काम करने का ढंग 10. कागज का तख्ता, तपाने या पकाने के लिए पहुंचाई जाने वाली गर्मी 11. लोग, प्रजा 12. नदी या समुद्र का सामने वाला दूसरा तह 13. नया-नया आया हुआ 16. दशा, अवस्था, संसार, जनसमूह (उर्दू) 18. वेतन लेकर काम करने वाला कर्मचारी 21. अस्वच्छ, अशुद्ध 22. पकाकर गाढ़ा किया हुआ गन्ने का रस 23. कूड़ा-करकट, कबाड़

ऊपर से नीचे
1. उपजाऊपन (सं.) 2. उल्टी करना, कै करना 3. श्रीकृष्ण, बारह मात्राओं का एक ताल 4. लक्ष्मी, पत्नी 5. परिश्रम 6. छुरे के समान, चीरफाड़ करने का यंत्र (उर्दू) 8. मंत्र पढ़कर किसी देवता के लिए अग्नि में आहुति देना, होम करना (सं.) 9. सावधान, सतर्क 12. पाताल लोक में बहने वाली नदी (सं.) 14. बाजा बजाना 15. प्रात:काल, सुबह 17. आक 19. उस समय, इस वजह से (उर्दू) 20. सरल, सीधा-सादा

Solution 12072

ब	द	च	ल	न	■	अ	मा
च	म	क	■	ग	ज	ध	र
का	■	म	द	द	गा	र	■
ना	मां	क	न	■	ना	■	अ
■	सा	■	द	र्शी	■	त	म
म	हा	म	ना	■	बे	क	ल
चा	र	मी	ना	र	■	रा	ता
न	■	रा	■	स	म	र	स

ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में मित्र से भेंटवार्ता होगी, आर्थिक सहयोग मिलेगा, शिक्षा के क्षेत्र में अचानक यात्रा होगी, वर्ष के मध्य में सामाजिक कार्यो में मन नहीं लगेगा, व्यापार व्यवसाय में व्यर्थ भागदौड़ एवं व्यय में वृद्धि होगी, मित्र के कारण तनाव रहेगा, वर्ष के अन्त में प्रतिष्ठा एवं यश में वृद्धि होगी, घरेलू कार्यो में व्यस्तता रहेगी, खर्च पर नियंत्रण रखें.

मेष और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होने का योग है, वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को मान सम्मान बढ़ेगा, शिक्षा के क्षेत्र में वृद्धि होगी, मान सम्मान बढ़ेगा, पारिवारिक जीवन सुखमय बना रहेगा, यात्रा का योग है, कर्क और सिंह राशि के व्यक्तियों की शत्रुओं के षडयंत्र से सतर्कता बांछनीय, मिथुन और कन्या राशि के व्यक्तियों को संयम से कार्य करना हितकर रहेगा, मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों का बचपन की मित्रता का लाभ प्राप्त होगा, धनु और मीन राशि के व्यक्तियों का साहस बना रहेगा.

आज जन्मे शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक दुबला पतला, किन्तु लम्बे कद का परिश्रमी, परोपकारी एवं न्यायप्रिय रहेगा, 32 वर्ष की आयु के बाद विशेष उन्नति होगी, राजकीय कार्यो में सफ्लता प्राप्त करेंगे, स्वाभिमानी तथा शिक्षा दीक्षा उत्तम होगी.

उदयकालीन ग्रह चाल

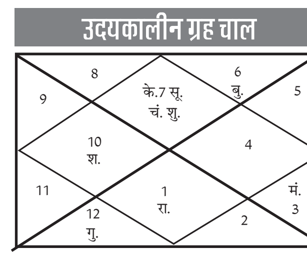

पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2082 मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया भृगुवासरे दिन 2/31, कृतिका नक्षत्रे प्रात: 7/1 तदुपरि रोहिणी नक्षत्रे रातअंत 5/22, वरीयान योगे प्रात: 6/44 तदुपरि परिघ योगे रात 3/37, गर करणे सू.उ. 6/31, सू.अ. 5/29, चन्द्रचार वृषभ, शु.रा. 2,4,5,8,9,12 अ.रा. 3,6,7,10,11,1 शुभांक- 4,6,0.

व्यापार भविष्य

मार्गशीर्ष कृष्ण द्वितीया को कृतिका/रोहिणी नक्षत्र के प्रभाव से जौ, चना, बाजरा, के भाव में तेजी होगी, गुड, खांड, में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, की चाल में सुधार होगा, सरसों तिल, तेल, में साधरण तेजी होगी. भाग्यांक 2354 है.

मेष- दूसरों की बातों में आकर अपनों से दूरियां बना लेंगे, प्रतियोगी परीक्षा में सफ्लता मिलेगी, आपकी उपयुक्त बात को बल मिलेगा, महत्वपूर्ण कार्य योजना बनेगी.

वृषभ- वित्तीय मामले सुलझेंगे, ऐसी कोई बात मालुम होगी, जिससे आपके बाहर जाने की योजना बनेगी, स्वास्थ्य में थकान महसूस होगी.

मिथुन- व्यापारिक सौदेबाजी लाभदायक रहेगी, पारिवारिक आयोजनों से प्रसन्नता होगी, विवाद पर संयम रखें, खर्च की अधिकता से मन अशांत रह सकता है.

कर्क- मधुर वाणी से सबको जीत लेंगे, प्रियजन से मुलाकात सुखद रहेगी, नई परेशानी आने से आपका महत्वपूर्ण कार्य रूक सकता है, सावधानी रखें.

सिंह- बुजुर्गो के स्वास्थ्य की चिन्ता रह सकती है, जीवनसाथी के व्यवहार से खिन्नता बढेगी, मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी, अधिकारी आपकी मदद करेंगे.

कन्या- मित्रों की मदद से अधूरे कार्य पूरे होंगे, नई जगह पर खुद को असहज महसूस करेंगे, पुराना कार्य व्यवस्थित करें, नये काम को स्वरूप देने का प्रयास होगा.

तुला- तनाव दूर होगा, विपरीत हालात में समझौता करना ठीक रहेगा, जिस मामले में आप प्रयास कर रहे हैं,उसमें सफ्लता मिलेगी, संयम रखें.

वृश्चिक- जीवनसाथी के स्वास्थ्य की चिन्ता रहेगी, धन लाभ के अवसर आयेंगे, पारिवारिक दायित्वों की पूर्ति होगी, मानसिक संतोष रहेगा.

धनु- मित्रों की कहासुनी से दुख होगा, भय से छुटकारा मिलेगा, लाभ होगा पर कम, लापरवाही से नुकसान हो सकता है, वाद विवाद से बचें.

मकर- उच्च अध्ययन में बेहतर परिणाम मिलने की संभावना है, सुख सुविधा पर खर्च होगा, रूके मामलों में गति आयेगी, स्वास्थ्य में ताजगी रहेगी.

कुम्भ- झूठ बोलकर लोग भ्रमित कर सकते हैं, हक के लिये संघर्ष करना पडेगा, ज्यादा, जोड़तोड़ से नुकसान हो सकता है, निजी मामलों को स्वयं करें.

मीन- सामूहिक कार्य में सबकी सहमति से कार्य करें, कोर्ट कचहरी के मामले सुलझेंगे, कल की अपेक्षा आज के कार्य पर ध्यान रखकर कार्य करना हितकर रहेगा.

SUDOKU 7205

		8				1	5	
2					1	8		
3			4		6	7		9
5					9			
	9		2	3	4		7	
			1					8
4		7	6		5			1
		6	7					4
	5	3				2		

■ प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. ■ पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. ■ पहेली का केवल एक ही हल है.

नवभारत सू-डोकू 7204

3	9	7	5	2	1	4	8	6
5	4	2	9	6	8	7	1	3
8	6	1	3	7	4	9	5	2
2	8	9	1	5	3	6	4	7
4	7	3	2	8	6	5	9	1
6	1	5	4	9	7	2	3	8
9	3	4	7	1	2	8	6	5
7	5	6	8	3	9	1	2	4
1	2	8	6	4	5	3	7	9